जीविका परियोजना और ग्रामीण महिलाएँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

*उमेश कुमार**

जीविका परियोजना ग्रामीण महिला सशक्तिकरण तथा ग्रामीण महिलाओं को गरीबी रेखा के नीचे के लोगों को उपर उठाने के लिए बिहार सरकार द्वारा चलाई गई एक परियोजना है। इसकी शुरूआत बिहार में सबसे पहले 02 अक्टूबर 2007 को ''विश्व बैंक की सहायता'' से किया गया तथा बिहार में इसका पूर्ण रूप से विस्तार 02 अक्टूबर 2009 में किया गया। जीविका का मुख्य उद्देश्य है – निर्धनता स्तर की पहचान करना तथा निर्धनता उन्मूलन के लिए सशक्त माध्यम स्वंय सहायता समूह का निर्माण कर ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। साथ ही जीविकार्जन के अलावा महिलाएँ खाद्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य रक्षा का भी काम कर रही हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए यह परियोजना बिहार में प्रत्येक महिलाओं के लिए खुला है। इस परियोजना ने कई लाख घरों में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है। प्रारम्भ में यह परियोजना बिहार के 09 जिलों में प्रारम्भ की गई थी परन्तु वर्तमान में बिहार के सभी जिलों में इस परियोजना का कार्य चल रहा है। विभिन्न जिलों के विभिन्न ग्रामों में ग्राम संगठन स्तर पर सीता, गुलाब, गंगा, अन्नपूर्णा तथा राधा आदि नामों से बनाए गए स्वंय सहायता समूह की सभी क्रियाकलाप महिलाएँ हीं करती हैं। इन्हीं महिलाओं में कोई बैंक मित्र का काम संभाल रही हैं, तो कोई समूह को प्रशिक्षित करने का तथा कोई रिर्सोस पर्सन भी हैं।

जीविका परियोजना के अन्तर्गत स्वंय सहायता समूह के माध्यम से जुड़ने वाली समूह की महिलाओं में तालमेल और सहयोग की भावना का विकास हुआ है। इस परियोजना के माध्यम से वे सक्रिय हुई हैं। आज वे सशक्ता के साथ संघर्ष भी कर रही हैं तथा जागरूक भी हो रही हैं। इन समूहों से जुड़े परिवारों के समक्ष आने वाली समस्याओं के समाधान में भी उनकी सक्रिय भूमिका बढ़ी है। स्वंय सहायता समूह से जुड़े परिवार नियमित बचत एवं परस्पर लेनदेन के माध्यम से अपनी छोटी–मोटी आर्थिक समस्याओं का निराकरण भी कर रहे हैं। जीविका परियोजना ने वर्षों से महाजनों के चंगुल से फसंकर तंग–तबाह होने वाले निर्धन तबके के परिवार के लिए आशा की किरण जगा दी है। जरूरत पड़ने पर अब लोग महाजनों के पास नहीं जाते हैं बल्कि घर की महिलायें स्वंय सहायता समूह से जुड़कर जीविका परियोजना एवं बैंक से ऋण लेकर अपनी जरूरत पूरी कर लेते हैं।

---

* शोध छात्र (समाशास्त्र), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सरकारी स्तर के रिर्पोट एवं समाचार पत्रों के माध्यम से यह पता चलता है कि जीविका परियोजना के प्रयास से लाखों महिलायें स्वंय सहायता समूह से जुड़कर स्वरोजगार कर स्वावलंबी बनने की ओर अग्रसर हैं। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि जीविका परियोजना द्वारा स्वंय सहायता समूह को उपलब्ध कराए गए ऋण का मात्र 02 फीसदी ब्याज लगता है। उक्त ब्याज भी संबंधित स्वंय सहायता समूह के खाते में ही जमा होता है। बैंक खाता में जमा ऋण की राशि समूह में शामिल महिलाओं के बीच ही लेन–देन के लिए होता है। एक स्वंय सहायता समूह में 12 से 15 महिलाएँ रहती हैं। कई ऐसे जिले हैं जहाँ जीविका द्वारा कार्य शुरू करने के बाद इन महिलाओं को महाजनों के पास नहीं जाना पड़ता है बल्कि स्वंय सहायता समूह से जुड़कर महिलाएँ स्वरोजगार कर आत्मनिर्भर हो रही हैं। स्वंय सहायता समूह के माध्यम से जीविका परियोजना से जुड़कर सैंकड़ों महिलाएँ मुर्गी पालन, बकरी पालन, सिलाई–कटाई के साथ ही अन्य कुटीर उद्योग आदि के माध्यम से स्वरोजगार कर स्वाबलंबी बनी हैं। इसके अलावा स्वंय सहायता समूह से जुड़ने वाली हजारों निरक्षर महिलाओं को साक्षर बनाकर हस्ताक्षर करना सिखाया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :– जीविका परियोजना ने स्वंय सहायता समूह का गठन कर महिलाओं को सशक्त करने का कार्य किया है। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है कि जीविका परियोजना के अन्तर्गत गठित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ा है।

अध्ययन पद्धति :– प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। तथ्यों के संकलन के साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा साक्षात्कार प्रविधि के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :– प्रस्तुत शोध पत्र उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर मुजफ्फरपुर जिला के मुशहरी प्रखण्ड के अन्तर्गत मणिका विशुनपुर चाँद पंचायत के अन्तर्गत जीविका परियोजना ने किस प्रकार महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है तथा उन्हें किस प्रकार सशक्त किया है। इस पंचायत में जीविका परियोजना के माध्यम से कई समूह गठित किये गये हैं तथा ग्रामीण महिलाओं को इन समूहों से जोड़ा गया है जिनके संबंध में प्रस्तुत अध्ययन किया जा रहा है।

समग्र एवं निदर्शन :– प्रस्तुत अध्ययन के लिए मुजफ्फरपुर जिला को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लिया गया है तथा अध्ययन क्षेत्र मुजफ्फरपुर जिला के मुसहरी प्रखण्ड के मणिका विशुनपुर चाँद पंचायत से 50 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति से किया गया है तथा अध्ययन विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन किया गया है।

तथ्य विश्लेषण :– अध्ययन क्षेत्र से चयनित किये गये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है :–

तालिका संख्या :– 01
क्या आपको लगता है कि जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को सशक्त किया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	44	88	06	12

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न **क्या आपको लगता है कि जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया है** तो कुल उत्तरदाताओं के 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया हैं जबकि कुल उत्तरदाताओं के 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या :– 02
क्या आपको लगता है कि जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	41	82	09	18

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न **जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है** तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 82 प्रतिशत ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 18 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि ऐसा नहीं है।

तालिका संख्या :– 03
क्या आप ऐसा मानते हैं कि जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूक किया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	45	90	05	10

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न **जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूक किया है** तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 90 प्रतिशत

ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि ऐसा नहीं है।

तालिका संख्या :– 4

क्या आपको ऐसा लगता है कि जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को ऋणगस्तता से मुक्ति दिलाया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	40	80	10	20

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न **जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को ऋणगस्तता से मुक्ति दिलाया है** तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है जबकि 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या :– 5

क्या आपको ऐसा लगता है कि जीविका परियोजना का प्रभाव बालिका शिक्षा पर भी पड़ा है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नहीं	
कुल सं०	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
50	100	50	100	00	00

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न **क्या आपको ऐसा लगता है कि जीविका परियोजना का प्रभाव बालिका शिक्षा पर भी पड़ा है** तो स्पष्ट है कि कुल उत्तरदाताओं के 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है।

निष्कर्ष :– इस प्रकार उपरोक्त विवरणों के आधार पर स्पष्ट है कि ग्रामीण महिलाओं के बीच गरीबी दूर करने में जीविका परियोजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। परियोजना से जुड़कर ऋण मुहैया कराया जा रहा है तथा स्वंय सहायता समूह के माध्यम से स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने से ग्रामीण महिलाएँ लाभान्वित हो रही हैं। इतना ही नहीं स्वरोजगार के लिए ना केवल धन मुहैया कराना बल्कि उसके समुचित कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। कर्ज मुहैया होने से स्थानीय महाजन के चंगुल से भी महिलाओं को मुक्ति मिल रही है। आत्मनिर्भरता व स्वाबलंबन की दिशा में यह प्रयास मिल का पत्थर साबित हो रहा है। वर्तमान में मुजफ्फरपुर जिला के मुसहरी प्रखण्ड की महिलाएँ दूध उत्पादन, पशु पालन, परम्परागत खेती और सब्जी उत्पादन कर रूपये कमा रही हैं। राखी और

मास्क बनाकर भी महिलाओं ने स्वरोजगार के क्षेत्र में काफी उपलब्धि हासिल की है।

अतः हम कह सकते हैं कि जीविका परियोजना बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (BRLPS) ''जीविका'', बिहार सरकार की सोसायटी रजिस्ट्रेशन अधिनियम, 1860 के अंतर्गत पंजीकृत संस्था है। अब यह संस्था बिहार में राष्ट्रीय ग्रामीण अजीविका मिशन (NRLM) के तहत कार्य कर रहा है। इसके लिए एक व्यापक परियोजना कार्यान्वयन नीति तैयार की गयी है तथा उस पर राज्य सरकार एवं भारत सरकार का अनुमोदन प्राप्त किया गया है। बिहार सरकार इस परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए सभी प्रकार का सहयोग दे रही है। यह परियोजना बिहार के मुजफ्फरपुर जिला में भी निरन्तर कार्य कर रही है। परियोजना का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था उस लक्ष्य पर यह परियोजना खरी उतरी है। आज बिहार के प्रत्येक जिला सहित मुजफ्फरपुर जिला की गरीब तथा निर्धन महिलाओं को जीविकोपार्जन का एक आधार मिला है तथा इस परियोजना के माध्यम से आज इन महिलाओं का सशक्तिकरण भी हुआ है।

संदर्भ सूची :

1. महिला एवं बाल विकास के नूतन आयाम, प्रकाश नारायण नाटानी, माया प्रकाशन मन्दिर, जयपुर, 2010
2. भारतीय महिलाओं की दशा – सुभाष शर्मा, आधार प्रकाशन, पंचकुला हरियाणा, 2012
3. महिला एवं बाल विकास के नूतन आयाम, प्रकाश नारायण नाटानी, माया प्रकाशन मन्दिर, जयपुर, 2010
4. **www.brlps.in**

***